NJESR/October-2025/Volume-7/Issue-10 E-ISSN-2582-5836

DOI-10.53571/NJESR.2025.7.10.51-52

प्रवासी साहित्यकार सुधा ओम ढींगरा के साहित्य में आर्थिक आयाम

रेनू

शोधार्थी

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यायल

रोहतक (हरियाणा)

(Received-15September2025/Revised-25September2025/ Accepted-10October-2025/ Published-30October2025)

प्रवासी साहित्य के आर्थिक आयाम से अभिप्राय प्रवासी साहित्य में आर्थिक पहलुओं जैसे कि धन, प्रेषण रोजगार और व्यवसायों पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन। प्रवासी साहित्य में आर्थिक संघर्ष अवसरों की तलाश और विदेश में जीवन यापन की समस्या आती है एक महत्त्वपूर्ण लेख प्रवास का आर्थिक आयाम 2015 से 2020 तक कसोवो में जारी हुआ। इससे विकास और कसोवो से प्रवास के बीच संबंधों की पड़ताल करता है। ''व्यापक संदर्भों में प्रवासन को एक व्यक्तिगत विकल्प और एक सामाजिक निर्णय दोनों के रूप में अनुभव जन्य और सैद्धान्तिक बहस शामिल है। कोसोवा से प्रवास के हालिया इतिहास का विश्लेषण यह समझने के लिए किया गया है कि अतीत ने वर्तमान प्रवासन पैटर्न को कैसे प्रभावित किया है। इस कार्य का उद्देश्य आर्थिक विकास श्रम बाजार शैक्षणिक असमानताओं, बेरोजगारी और प्रतिभा पलायन परिघटना और आर्थिक स्थिरता को दो ऐसे चरों के रूप में परखता है जो एक–दूसरे को स्थायी रूप से प्रभावित करती है।''[1]

अर्थ कमाने के लिए भी विदेशों में आगमन निर्गमन को अधिक बल मिला है, लेकिन सर्वप्रथम अकारण ही मजदूरी के लिए भारतीयों को विदेश लेकर गए। अब अनेक देशों में लोग गिरमिटिया के रूप में प्रवासित हुए, तो वे अपने साथ अपनी सांस्कृतिक गठरी को साथ लेकर गए और उसे अपने साथ संरक्षित रखा, उसका संवर्धन किया और अपने बाद अपनी आगे की पीढ़ियों को हस्तांतरित कर दिया। ''प्रवासन के बाद गिरमिटिया लोगों को गंतव्य में नाना प्रकार की यातनाओं से गुजरना पड़ा। ऐसा ही एक प्रवासी देश मॉरीशस भी है जहाँ पर गिरमिटिया को अपनी संस्कृति एवं आस्थाओं को पालने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा।''[2]

आर्थिक (अर्थ) के लिए अवसरों की तलाश के लिए भी प्रवास मुख्य कारण रहा है, शुरुआती दौर में जो गुलाम बनाकर वहाँ ले जाये गए थे उन्हें अनेक शारीरिक, मानसिक, आर्थिक यातनाएँ झेलनी पड़ी। अपनों से दूर रहने की पीड़ा और इस बेगाने शहर में झेल रहे व्यथा–कथा को कलमबद्ध कर उन्होंने प्रवासी साहित्य का आरंभ किया। बाद के समय में प्रवासी साहित्य का फलक बढ़ गया। आर्थिक रूप से मजबूत होते हुए भी लोग स्वेच्छा से विदेशों में बस गए। इन्होंने भी प्रवास की समस्याओं, संवेदनाओं के साथ–साथ वहाँ रहकर भारत की समस्याओं पर लिखना प्रारंभ किया तथा प्रवासी साहित्य में अपनी उपस्थित दर्ज कराई।

कुंवरपाल सिंह का कहना है, ''आर्थिक जगत में वैश्वीकरण की धारणा जिस प्रकार फलीभूत हो रही है और जिस गाँव के स्वप्न को साकार करती दिखाई पड़ रही है। उसी प्रकार से साहित्य लाया जा सकता है। समन्वय सदा से साहित्य का सर्वोत्कृष्ट गुण रहा है।''[3]

वर्तमान में रचे जा रहे प्रवासी साहित्य की संपूर्ण दृष्टि भारत के रंग में रंगी नजर आती है। आज मॉरीशस, अमेरिका एवं इंग्लैंड में प्रवासी भारतीयों की संख्या सबसे अधिक है और संभवतः यही वजह है कि इन देशों में हिंदी लेखकों की संख्या भी सबसे अधिक है। कमल किशोर गोयनका कहते हैं, ''अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों के भारतवंशी हिंदी लेखक

स्वयं को भारतीय लेखक मानते हैं और हम अपनी हिंदी रचनाओं में देशी पहचान और भारतीय संस्कृति को मजबूत आधार देते हैं।''[4]

अतः हिंदी साहित्य में आर्थिक आयाम एक महत्त्वपूर्ण पहलू है, जो प्रवासी जीवन की आर्थिक चुनौतियों और अवसरों को प्रतिबिंबित करता है, चूंकि प्रवासी साहित्य आर्थिक आयामों को उजागर करके प्रवास के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों के साथ–साथ आर्थिक पहलुओं पर भी प्रकाश डालता है।

प्रवासी हिंदी के विस्तृत वैचारिक व व्यावहारिक क्षेत्र की सार्वभौमिक गहनता को समझने के लिए इसके आर्थिक व समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अर्थ को समझना भी विषयानुकूल होगा। इसी के प्रवासी साहित्य की बागडोर स्त्री रचनाओं के हाथ में है यह साफ दिखाई देती है। भारत में रचे जाने वाले हिंदी तथा साहित्य की अपेक्षा प्रवासी कथा साहित्य के लेखन में काफी कठिनाइयाँ आती हैं, क्योंकि प्रवसी कथा साहित्य की संवेदना, परिवेश, सरोकार एवं परिस्थितियाँ एकदम भिन्न हैं, फिर भी वह हिंदी साहित्य को वैश्विक बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इस प्रकार व्यापक संदर्भों के विवेचन के उपरांत हमें प्रवासी साहित्य में मूल्य संक्रमण की यथार्थ अभिव्यक्ति दिखाई देती है जो प्रवास के दौरान उन्हें नजदीक से देखने और लिखने के लिए मजबूर करती हैं।

संदर्भ सूची ——————————

1. मानविकी और विज्ञान संचार, लेख संख्या 273 (2021)
2. प्रवासी हिंदी साहित्य दशा एवं दिशा, प्रधान संपादक प्रो. प्रदीप श्रीधर, प. 129
3. वर्तमान साहित्य कुंवरपाल सिंह, नमिता सिंह (संपादक), प्रवासी हिंदी लेखन तथा भारतीय हिंदी केबिनेट
4. सुधा ओम ढींगरा, नक्काशीदार, शिवानी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2016, पृ. 9